RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-11
November -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भक्ति एवं संगीत की अनन्य उपासक सिद्धेश्वरी देवी

डॉ0 चित्रा चौरसिया

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संगीत गायन विभाग, आर्यकन्या डिग्री, कालेज, इलाहाबाद।

प्रस्तावना :

भक्ति एवं संगीत की अनन्य उपासक सिद्धेश्वरी देवी के जीवन की कुछ स्मृतियों का संग्रह मात्र है। उनका जीवन शिव की आराधना के लिये पूर्णतः समर्पित था, अपने दैनिक जीवन की शुरूआत वो शिव आरती से करती थीं। यद्यपि वह शिव की उपासक थीं फिर भी सभी धर्मों और देवी–देवताओं के प्रति भी उनकी गहरी आस्था थी। साधु–संतों और ब्राह्मणों पर उनको भरपूर विश्वास था। गायकी में उत्कृष्ट योगदान के लिये इन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें अपने गायन का सम्पूर्ण श्रेय भगवान शिव को दिया और खुद को हमेशा उनकी बेटी माना। सिद्धेश्वरी देवी की अथाह आस्था ने उनके संगीत को और भी समृद्ध बनाया।पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित सिद्धेश्वरी देवी बनारस घराने की शास्त्रीय व उपशास्त्रीय गायिका थी। भगवान शिव की आध्यात्म नगरी काशी के धार्मिक वातावरण से आप प्रभावित रहीं। सिद्धेश्वरी देवी जी को प्रत्येक धर्म के प्रति अटूट आस्था थी। भगवान शिव की उपासक सिद्धेश्वरी जी उन्हें अपना अभिभावक स्वरूप पिता मानती थीं, बचपन में ही अनाथ होने के कारण उन्होंने भगवान शिव को अपना रक्षक माना।

सिद्धेश्वरी देवी प्रतिदिन प्रातः विश्वनाथ मन्दिर में प्रातः कालीन आरती की समाप्ति तक वहीं रूकी रहती और मन्दिर के कोने में खड़े होकर जोर–जोर से भगवान शिव की स्तुति गाती। ''डमरू हर कर बाजे'' गाते हुये कभी वह रोती एवं मुस्कुराते हुए सदैव ही शान्त दिमाग और चेहरे की चमक से साथ ही घर वापस लौटतीं। विश्वनाथ मन्दिर से बाहर निकलने पर बायीं ओर एक और शिव जी का मन्दिर है जिससे पीतल से निर्मित भगवान शिव की मूर्ति है, जिसमें उनकी मूँछे ऊपर की ओर दिखती है। सिद्धेश्वरी देवी इस मूर्ति को बचपन से ही देख रहीं थीं, राजेश्वरी देवी के घर पर भी मूँछों वाले शिवजी का तिथि पत्र ;ब्समदकमतद्ध था। जब भी कोई उनसे उनके पिता के लिए पूछता तो वह उसी तिथि पत्र की ओर दिखा देतीं। इसलिए भगवान शिव उनके पिता बन गये और उनकी प्रत्येक कठिनाई के समय एक भावनात्मक सहारा बन गए थे। '' जैसे–जैसे मैं बड़ी हुई मैने महसूस किया कि जिनको मैने अपने लिए सरलता एवं विश्वास के साथ पिता चुना वो देवों के देव सर्वशक्तिमान महादेव थे। मुझे पूर्ण विश्वास था कि भगवान अपने सच्चे भक्त का सहयोग सदैव करते हैं, शिव जी ने भी विश्वास किया कि एक कला विहीन और छल रहित विश्वास मुझे जैसी बच्ची के दिल में उनके लिए था। वो शिव ही हैं, जिन्होंने संगीत और नृत्य को जन्म दिया और मुझे उनकी स्तुति गाने की प्रतिभा एवं अवसर प्रदान किया, ये एक उपहार है जो उन्होंने अपनी बेटी को दिया''[1] ये वह अक्सर बोलती थीं।

सिद्धेश्वरी देवी का सभी धर्म के प्रति भावात्मक विश्वास एवं सम्मान था, उनके विश्वनाथ गली वाले घर में एक मजार थी जो कि घर की सीढ़ी के नीचे थी, यह मजार किसी मुस्लिम फकीर बाबा की थी, सिद्धेश्वरी देवी जी अपनी निष्ठा एवं श्रद्धा के साथ उस मजार की सफाई प्रतिदिन करतीं एवं फूल अगरबत्ती भी लगाती थीं। आपको मजार की पूजा व सफाई करने में अत्यन्त शांति मिलती थी। उनके अनुसार मजार के अन्दर सन्त महात्मा सब कुछ देखते हैं, सिद्धेश्वरी देवी ने स्थाई रूप से एक मौलवी को मजार की देखरेख के लिए नियुक्त किया जिन्हें वो नियमित रूप से वेतन भी देती थीं।

सिद्धेश्वरी देवी जी को ईश्वर तथा काशी के सभी साधु–सन्तों पर भरपूर विश्वास था। उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण एसी घटना थी जिससे यह प्रदर्शित होता है कि उन्हें धर्म, कर्म, और पूजा पाठ में कितनी आस्था थी।सन् 1932 में सिद्धेश्वरी देवी जी दरभंगा में कार्यक्रम की प्रस्तुति के लिए गई थी, सफलता पूर्वक कार्यक्रम के पश्चात् अन्जाने लोगों से बधाईयों का बाढ़ उमड़ा, फूल, उपहार, बधाईयाँ उनके गुणवत्ता की विवेचना करते हुए उनको दिया, अव्यवस्था के मध्य किसी ने उन्हें पान पेश किया, जिसे उन्होंने मुँह में रखकर गालों में दबा लिया, किन्तु जब पान उनके गले तक पहुँचा उस समय उसका स्वाद तेजाब जैसा महसूस हो रहा था, ओर कांच के टुकड़ों जैसा काट रहा था। उन्हें अहसास हुआ कि जहर उनके अन्दर पहुँच चुका था, और किसी व्यक्ति ने जलन व असुरक्षित भावना के तहत ये सौदा किया था। अगले कई हफ्तों तक सिद्धेश्वरी जी के लिए बोलना भी बहुत मुश्किल था, उन्होंने ने अपनी आवाज खो दी थी। सभी प्रकार के चिकित्सीय इलाज एवं दवाईयों का असर नहीं हो रहा था। उनका एक प्रख्यात गायिका बनने का सपना अधूरा प्रतीत हो रहा था।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

प्रत्येक दिन के तरह आप फिर से मन्दिरों में नियमित दर्शन करने जाने लगी, वहीं एक अघोरी बाबा का घर था जो कि असाधारण शक्ति के उपासक एवं अध्यत्मिक अर्न्तदृष्टि को कब्जे में रखते थे, उनके लिए हवन कुण्ड की राख बहुत महत्वपूर्ण होती थी। अघोरी राजेश्वर राम बाबा उस समय के गुरू थे। जब सिद्धेश्वरी जी वहाँ गई वो उन्होंने उनके दुःख को पहचान लिया '' घबराने की कोई बात नहीं, इस भभूत को लो और सीढ़ीयों से उतरकर तालाब तक जाओं और पानी पीओं इसके बाद तुम स्वस्थ हो जाओंगी''[2] सिद्धेश्वरी देवी जी सीढ़ी से उतरीं और तालाब के किनारे पहुँच गई, उन्होंने निश्चल पानी को देख, जो हरे रंग में परिवर्तित हो चुका था, व्यर्थ चीजों के टुकड़ों और रोगाणु युक्त छोड़े गये, कपड़े तैर रहे थे, उन्हें उबकाई सी महसूस होने लगी, लेकिन वो आस्था व संकल्प के साथ नीचे उतरीं और भभूत को अपने जीभ पर रख कर हथेली में पानी भरकर उसे निगल लिया, भभूत निगलते हुए उन्हें जानलेवा उल्टी हुई, और मूर्छा की अवस्था में वह सीढ़ीयों पर ही लेट गयीं। कुछ देर के बाद दूसरों के सहारे बाबा के पास पहुँची, वे हंसे और उन्हें गाने के लिए बोले, आश्चर्य की बात थी कि वो गाने लगीं 'मन लागों मेरो यार फकीरी में, कीनाराम सद्गुरू की दया चारों दिशा जागीरों में। ''उस दिन से मेरी हालत सुधरने लगी थी। कैसे भी मेरे लिए यह ईश्वर के द्वारा मेरे भाग्य का एक अलग संकेत था। इस हादसे ने उन्हें ईश्वर के पुजारियों के प्रति पूर्ण विश्वास दिलाया''[3]

सिद्धेश्वरी देवी के घर का दरवाजा सदैव कलाकारों, सन्तों, पुरोहितों, कवियों, विद्वानों, मौलवियों और अन्य सभी एसे लोग जो उन्हें धर्म और धार्मिक कृत्यों के भूल–भूलैया से बचने का मार्गदर्शन कर सकते थे, उनके लिए खुला रहता था। वो उन्हें परोपकारी जैसा देखती थी, वो जीवन भर लोगो के साथ एक जैसा आदर का बरताव करती थी, उनको धर्म, जाति और सम्प्रदाय के बीच में कोई अलगाव नहीं था। बचपन के दिनों में राजेश्वरी देवी के घर में कई ब्राह्मण पुजारी आते थे, उनमें से एक तिवारी पंडित जो उनके भविष्य के प्रसिद्धि की भविष्यवाणी करते थे। दूसरे बच्चा महाराज जो कि विन्ध्याचल में देवी दुर्गा के मन्दिर में विशेष पुजारी थे। सिद्धेश्वरी देवी जब कभी विन्ध्याचल जाती तो बच्चा महाराज जी धर्म के विषय में मार्गदर्शन करने का निवेदन करती थी। उन्होंने देवी दुर्गा की पूजा का पारम्परिक विधि एवं मंत्र जाय सिद्धेश्वरी देवी को सिखाया। पूजा की प्रेरणा प्राप्त होने के कारण सिद्धेश्वरी जी ने 1944 में मलदिया रोड के बगीचे (फार्म हाउस) में पीले रंग का एक छोटा दुर्गा मन्दिर का निर्माण करवाया, जिसमें नियमित पूजा के लिए उन्होंने एक पुजारी भी नियुक्त किया।

बाबा श्री नारायण स्वामी का आप बहुत आदर व सम्मान करतीं थीं, उनके पास अलौकिक शक्तियों का भण्डार था। सिद्धेश्वरी देवी अक्सर उनसे मिला करती थीं, और मार्गदर्शन प्राप्त करती रहीं। बाबा जब बनारस छोड़ने लगे तो सिद्धेश्वरी जी से उन्होंने पूछा तुम्हें सबसे अधिक क्या चाहिए'' वो बोली जब मैं गाऊँ तो बिजली चमक जायें'' बाबा बोले तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। उस आध्यात्मिक प्रवृत्ति व्यक्तित्व के उपहार स्वरूप आशीर्वाद का सिद्धेश्वरी जी के जीवन के अन्तिम क्षणों तक तीव्रता के साथ उनको सफलता दिलाता रहा। सिद्धेश्वरी जी सदैव उनके सम्मान में अष्टपदी गाती थीं।धर्म संगीत और प्यार इस त्रिपक्षीय पथ पर चलकर सिद्धेश्वरी जी ने अपने सिद्धी को खोजा। उनके धार्मिक प्रवृत्ति ने उनके संगीत को समृद्ध बनाया और धर्म के जटिल दर्शनों को आकार दिया।

सन्दर्भ

- [1]As I grew up, I realised that the father had chosen for myself in the innocence of faith was the all pawerful Mahadev, the god of gods. I firmly believe that God responds to the pure emotions of the devotee. Shiva too responded to the completely artless and guideless trust that my child's heart had in him . It is Shiva. from whom all music and dance originate. Who decided to give me the talent and opportunity to sing his praises his gift to his daughter. She would say. (माँ..... सिद्धेश्वरी देवी) (सविता देवी) पृ0सं0 51

- [2]He looked at me with a bit of amusement tempered with affection. No need to worry. Here take this ash and go to the pond down those stairs and drink the water. You will be fine after that माँ.....सिद्धेश्वरी देवी(सविता देवी) पृष्ठ सं0 58

- [3]Since that day, I begin improving. However for me it was just another indication of my fate being decided by divinity.

- शोध प्रबन्ध–डॉ0 चित्रा चौरसिया
- माँ ..... पुस्तक (सविता देवी)
- काशी की संगीत परम्परा (प0 कामेश्वर नाथ मिश्र)
- ठुमरी एवं महिला कलाकार (पूर्णिमा द्विवेदी)
- बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत (डा सुधा सहगल एवं मुक्ता)

RRIJM 2015, All Rights Reserved